टर्की फार्मिंग

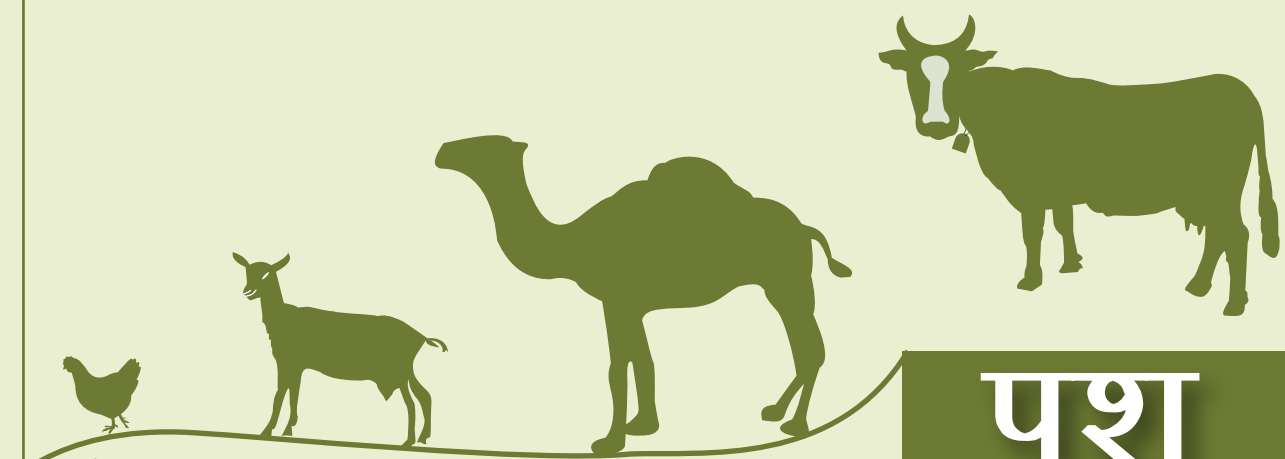

KRISHI VASANT

Central Institute of Cotton Research, Nagpur

9–13 February, 2014

पशु पालन

टर्की फार्मिंग

टर्की मुख्यतः मांस के लिए पाली जाती है और यह अधिकांशतः पश्चिमी देशों–विशेषकर संयुक्त राज्य अमेरिका तथा यूनाइटेड किंगडम में अत्याधिक प्रसिद्ध है। इसका सफेद मांस चर्बी रहित तथा स्वादिष्टता के कारण अत्याधिक पसंद किया जाता है तथा विशेषकर क्रिसमस एवं नव वर्ष के त्योहारों पर इसकी मांग अधिक होती है। भारत में टर्की पालन का कार्य अभी भी प्रारंभिक अवस्था में है और देश में विशेषकर विभिन्न प्रकार के आहार एवं रोजगार उपलब्ध कराने के लिए इसे कुक्कुट पालकों में लोकप्रिय बनाने की अवश्यकता है। टर्की पालक का कार्य परिवार अथवा युवाओं के लिए एक परियोजना हो सकती है। यह लघु तथा सीमांत किसानों के जीवन स्तर को ऊंचा उठाने का एक सशक्त माध्यम हो सकता है क्योंकि इन पक्षियों को घर, उपकरणों एवं प्रबन्धन पर अल्पतम व्यय करने खुले अथवा अर्द्ध सघन पद्धति से पाला जा सकता है।

टर्की पालन कठिन कार्य नहीं है। टर्की पालन प्रारंभ करने के बाद थोड़ा सा ध्यान देने की आवश्यकता है। कभी–कभी ये दाना खाना तथा पानी पीना धीरे–धीरे सीखती है। टर्की को मुर्गी तथा अन्य कुक्कुटों से अलग रखना चाहिए जिससे उन्हें ब्लैकहेड तथा सिनुसिटिस नाम बीमारियों से बचाया जा सके । ब्रूडिंग के कुछ सप्ताह के दौरान टर्की को गर्म तथा सूखे वातावरण में रखना अत्यन्त आवश्यक है। यदि अच्छे स्टॉक से टर्की पालन का कार्य प्रारंभ किया गया है और आहार, आवास तथा प्रबंधन की उचित व्यवस्था की गई है तो कोई भी व्यक्ति सफलतापूर्वक यह कार्य कर सकता है।

वन्य टर्की से अनेक पालतू टर्की प्रजातियों को विकसित किया गया है। उनमें लॉर्ज ह्वाइट (इन्हें ब्रॉड ब्रेस्टेड ह्वाइट भी कहा जाता है), ब्रॉड ब्रेस्टेड ब्रोन्ज तथा बेल्टस्विल स्माल ह्वाइट (इन्हें बेल्टस्विल ह्वाइट भी कहा जाता है) आदि प्रमुख है। आजकल उपरोक्त तीनों प्रजातियों में से केवल लॉर्ज ह्वाइट प्रजाति ही व्यावसायिक उद्देश्य के लिए प्रसिद्ध है। इनमें से ब्रॉड ब्रेस्टेड ब्रोन्ज प्रजाति अच्छी वृद्धि दर, पुष्टिकरण, मांसलता तथा आहार रूपान्तरण के लिए बहुत प्रसिद्ध है। फिर भी इसके डार्क पिन पृच्छ होने के कारण संसाधित प्रदर्शन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। यह एक प्रमुख कारण है, जिसकी वजह से ब्रोन्ज का स्थान लॉर्ज ह्वाइट प्रजाति ले रही है। टर्की का विपणन 16 सप्ताह की उम्र पर किया जाता है। वयस्क अवस्था में इसकी मादा का शरीर भार प्रायः 8 कि. ग्रा. तथा नर का लगभग 12 कि. ग्रा. हो जाता है। स्थानीय बाजार की मांग के आधार पर आरंभिक अवस्था में ही स्लाटर करने पर छोटे बच्चे का रोस्टर बनाया जा सकता है।

टर्की ब्रूडर आवास पूर्ण वात–संचार युक्त अच्छा बना होना चाहिए। भवन का फर्श अच्छा होना चाहिए जिससे उसे आसानी से साफ रोगाणुरहित किया जा सके। इसके लिए सीमेंट से बना फर्श सर्वोत्तम होता है। टर्की को सामान्यतया परिसार अथवा सघन बिछाली पद्धति में पाला जाता है। अनुसंधान कार्य के लिए छोटे समूहों के अलावा पिंजरा पद्धति अन्य मामलों में लोकप्रिय नहीं है। सघन बिछाली पद्धति के लाभों की तुलना परिसर पद्धति से करने पर स्पष्ट होता है कि सघन बिछाली पद्धति से परभक्षियों तथा प्रतिकूल मौसम से उत्तम सुरक्षा, जमीन की कम लागत, कम मजदूरी, रोगों से बचाव जमीन से उत्तर होने वाले रोग परजीवी आदि तथा प्रबन्धन में सुविधा का लाभ अधिक होता है।

यदि टर्की चूजों (पोल्ट) को जीवित रखना हो और उनसे अच्छी गुणवत्ता के उत्पाद प्राप्त करना हों तो सेने (ब्रूडिंग) के समय ही उन्हें पर्याप्त मात्रा में मूलभूत आवश्यकताएं उपलब्ध कराना चाहिए। मूलभूत आवश्यकताओं के अन्तर्गत ताजी हवा, स्वच्छ पानी, उपयुक्त आहार, अच्छा बिछावन तथा गर्मी का प्रबन्ध करना अति आवश्यक है। यदि चूजों को सेने की विभिन्न पद्धतियों से सही ढंग से सेया गया है तो इन मूलभूत आवश्यकताओं का उपयोग नये हैच के चूजों के लिए किया जा सकता है।

सर्दी और बसंत के महीने में चूजों को अपने जीवन के प्रथम 6 सप्ताह तक और गर्मी के महीने में प्रथम 4 सप्ताह तक गर्मी की आवश्यकता होती है। इस प्रकार चूजों के लिए प्रथम 8 सप्ताह तक सेने की अवधि निर्धारित करना सुरक्षित होगा क्योंकि इस आयु के टर्की चूजों को वर्ष में किसी भी समय किसी भी प्रकार के आवास में स्थानांतरित किया जा सकता है और ऐसे में उनको ठण्ड लगने का जोखिम नहीं रहता है।

एक दिवसीय टर्की चूजों को सेने के लिए अनेक प्रकार के ब्रूडर उपलब्ध हैं जिनसे चूजों को उपयुक्त ढंग से सेया जाता है। ब्रूडर में गर्मी के स्रोत के रूप में बिजली, गैस, तेल, लकड़ी अथवा कोयले का प्रयोग किया जा सकता है। ब्रूडिंग चूजों को गैस तथा बिजली से सेना सबसे अच्छा होता है। मुर्गियों के लिए उपयुक्त अधिकांश ब्रूडिंग पद्धतियों का टर्की के चूजों के लिए भी प्रयोग किया जा सकता है। यद्यपि यह ध्यान रखना चाहिए कि यदि टर्की अधिक भार वाली नस्ल की हो तो उसे बड़े कमरे की आवश्यकता होती है जिससे कि दूसरे सप्ताह के दौरान वृद्धि के समय फर्श स्थान कम न हो ।

स्थान की आवश्यकता

कैनिबॉलिज्म से बचाने के लिए पर्याप्त फर्श स्थान उपलब्ध कराना आवश्यक है। फर्श स्थान की आवश्यकता विभिन्न तथ्यों जैसे–आवासीय पद्धति (ब्रूडर हाउस, परिसर, अर्द्ध–सघन अथवा सघन) पक्षी की आयु तथा आकार (बड़े अथवा छोटे आकार के) आदि पर निर्भर करती है। सर्वाधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए उन्हें कभी भी अधिक भीड़ में नहीं रखना चाहिए । सघन बिछाली पद्धति में टर्की चूजों को प्रथम 3–4 सप्ताह के दौरान एक वर्ग फुट/चूजा तथा इस आयु के बाद 8 सप्ताह तक 1.5 वर्ग फुट फर्श स्थान की आवश्यकता होती है, जो उनकी दैहिकीय वृद्धि के लिए पर्याप्त होता है। इस प्रकार 4 सप्ताह की आयु के 100 चूजों को रखने के लिए 10 वर्ग फुट का एक कम्पार्टमेंट उपयुक्त होता है तथा उसके बाद उन्हें 8 सप्ताह तक के ब्रूडिंग के लिए 10X15 फुट के कम्पार्टमेंट में स्थानान्तरित किया जा सकता है। वे जैसे–जैसे बढ़ते जाते हैं उनके फर्श स्थान में उसी अनुपात में वृद्धि की जाती है। आठ से बारह सप्ताह की आयु तक के चूजों के लिए 2 वर्ग फुट/चूजा तथा उसके बाद सोलह सप्ताह की आयु तक के चूजों के लिए 2.5 वर्ग फुट/चूजा न्यूनतम फर्श स्थान की आवश्यकता होती है। सोलह सप्ताह की आयु के बाद उनके लिए 3–5 वर्ग फुट/टर्की फर्श स्थान आवश्यक है।

छोटे प्रकार की टर्की के लिए फर्श स्थान धीरे–धीरे कम किया जाता है। टर्की को कम से कम फर्श स्थान में भी पाला जा सकता है बशर्ते कि पक्षियों की डिबीकिंग हुई हो तथा न्यूनतम श्वसन संक्रमण के जोखिम ध्यान रखते हुए यांत्रिक रूप से बात–संचार की पर्याप्त व्यवस्था की गई हो। परिसर पद्धति में फर्श स्थान को लगभग एक तिहाई तक कम किया जा सकता है जबकि धूप और वर्षा से बचाने के लिए पक्षियों को कुछ आश्रय उपलब्ध कराया जा सकता है।

टर्की का प्रबन्धन भी प्रायः मुर्गियों की ही तरह होता है, फिर भी, पक्षी के आकार के अनुरूप प्रयुक्त फर्श–स्थान, दाना–पानी के बर्तनों को स्तर उपलब्ध कराना चाहिए। ब्रूडिंग के दौरान विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। व्यवहार के अनुसार टर्की चूजों को मुर्गियों के चूजों की अपेक्षा दुगुना स्थान उपलब्ध करना चाहिए। टर्की के चूजे मुर्गी के चूजों की भाँति आत्म निर्भर नहीं होते हैं, इसलिए उन्हें सर्वप्रथम खिलाने के लिए खुशामद या जबरदस्ती करनी पड़ती है। टर्की प्रायः घबराने वाले स्वभाव के पक्षी होते हैं इसलिए उनके साथ अधिक सावधानी बरतने की आवश्यकता होती है।

दाने व पानी के बर्तनों का प्रबन्ध

उस अवस्था में जब चूजे अपने आप से खाने पीने में असमर्थ हों तब एक या दो दिन के लिए टर्की चूजों को दिन में 2–3 बार हाथ से दाना खिलाना आवश्यक होता है। सात दिन से 3 सप्ताह तक की आयु के चूजों के लिए छोटे आकार के फीडर का प्रयोग कर सकते हैं। तीन सप्ताह की आयु तक के चूजों के लिए दो रेखीय इंच वाले फीडर पर प्रत्येक चूजों को दो रेखीय फीडर स्थान उपलब्ध कराना चाहिए । इस आयु के बाद विपणन (बाजार में जाने योग्य) तक वर्द्धनशील चूजों को 4 इंच गहरे तथा 3 रेखीय इंच स्थान वाले बड़े आकार के फीडर का प्रयोग सर्वोत्तम साबित हुआ है। इसे या तो लटका दिया जाता है अथवा स्टैंड पर फिक्स कर दिया जाता है।

प्रायः चूजों को शुरू में शीशे या प्लास्टिक फाउन्टेन से अथवा स्वचालित तरीके से पानी प्रदान किया जाता है। चूजों को पर्याप्त मात्रा में स्वच्छ पानी उपलब्ध कराना चाहिए। चूजों के लिए प्लास्टिक के फाउंटेन टाइप के तथा स्वचालित पानी के बर्तन (वाटरर) का प्रयोग शुरू किया जा सकता है। एक दिन से 3 सप्ताह तक की आयु के प्रति 100 चूजों के लिए 5 से 10 लीटर के तीन फाउंटेन की आवश्यकता पड़ती है। 3 सप्ताह से विपणन की आयु तक के प्रति 100 चूजों के लिए 20 लीटर क्षमता वाले दो फाउंटेन की जरूरत पड़ती है। छोटे समूह के लिए उनकी संख्या के आधार पर फाउंटेन का आकार निर्धारित किया जाता है। पानी के बर्तनों में पानी का स्तर चूजों के वक्ष के स्तर तक होना चाहिए, जिससे उनको पानी ग्रहण करने में सुगमता होगी । सही ढंग से दाना–पानी ग्रहण करने के लिए बिछावन की सतह को प्रतिदिन सही (उलट–पुलट) करना आवश्यक होता है।

एक दिवसीय टर्की चूजों के लिए प्रबन्ध

हैच के अनुमानित दिन अथवा चूजों की डिजीवरी से पूर्व ही एक दिवसीय चूजों के लिए तैयारियाँ शुरू कर देनी चाहिए । ब्रूडर हाउस तथा ब्रूडिंग के दौरान उसमें प्रयोग किये जाने वाले सभी सामानों/उपकरणों की ठीक ढंग से सफाई करनी चाहिए। यदि ब्रूडर हाउस का प्रयोग पहले मुर्गियों अथवा टर्की के लिए किया जा चुका है तो एक दिवसीय चूजों को रखने से पहले ब्रूडर हाउस तथा उसके सामानों/उपकरणों की बहुत ही सावधानी पूर्वक सफाई तथा विसंक्रमित करना अत्यन्त आवश्यक है। ब्रूडर घरों को विसंक्रमित करने के लिए फिनाइल अथवा क्वाटरनरी अमोनियम कम्पाउन्ड्स का प्रयोग किया जा सकता है। इन विसंक्रामकों में से किसी का भी प्रयोग करने के बाद ब्रूडर हाउस को लगभग दो सप्ताह तक सूखने तथा उसके अन्दर की हवा को बाहर निकलने के लिए खाली छोड़ देना चाहिए, उसके बाद ही उसमें नए चूजों को रखना चाहिए ।

ब्रूडर घर की सफाई, विसंक्रमित तथा सुखाने के बाद उसके फर्श पर 3 से 4 इंच मोटाई की बिछावन सामग्री फैला देनी चाहिए । बिछावन सामग्री का चयन करते समय इस बात पर विशेष ध्यान दिया जाये कि बिछावन सामग्री मोटी तथा सूखी हो और धूल तथा नमी रहित हो। बिछावन सामग्री कई प्रकार की होती है, इनमें जो कम खर्चीली हो, अधिकांशतः उसी का प्रयोग किया जाता है। बिछावन सामग्रियों में सामान्यतः लकड़ी का छीलन, लकड़ी का बुरादा, धान की भूसी तथा कागज के कतरन आदि होते है। यद्यपि धान की भूसी को टर्की के लिए बिछावन सामग्री के रूप में इस्तेमाल करने से बचना चाहिए क्योंकि टर्की के बच्चे अत्यधिक पेटू (अधिक खाने वाले) होने के कारण धान की भूसी को निगल जाते हैं। यह धान की भूसी उनकी भोजन नलिका (ग्रास नली) में अटक जाती है, जिससे उनकी मृत्यु हो जाती है। बिछावन को कागज से पूरी तरह से ढककर रखना चाहिए जिससे चूजे उसे खा न सकें। पैर की समस्याओं को रोकने के लिए खुरदरे अथवा पनालीदार कागज का प्रयोग करना चाहिए तथा इस कागज को सात दिन के बाद निकाल देना चाहिए । ब्रूडर घर के कोनों को छोटे तार की जाली अथवा ठोस सामग्री से गोल करना अच्छा होता है, इससे चूजों को कोनों में जमा होने से रोकने में सहायता मिलती है।

ब्रूडर घर में तार की जाली का फर्श प्रयोग करने से ब्रूडर घर के आकार में कमी की जा सकती है। प्रथम चार सप्ताह के दौरान 16 गेज के तार से 1/2 इंच की बनी जाली का फर्श के लिए प्रयोग किया जा सकता है। इसके बाद 16 गेज के तार से 3/4 इंच की बनी जाली का प्रयोग किया जा सकता है। हल्के भार के तार होने के कारण ये शीघ्र ही घिस जायेंगे। तारयुक्त फर्श ब्रूडरों को एक के ऊपर एक करके कई तलों में रखा जा सकता है। प्रथम 3–4 सप्ताह तक की आयु के 59–60 चूजों को रखने के लिए 3 X 6 X 1.5 फिट आकार का एक तल का ब्रूडर उपयुक्त होता है। इस आयु के बाद इसमें केवल 25–30 ग्रोविंग चूजे ही रखे जा सकते हैं। यदि तारयुक्त फर्श ब्रूडरों का प्रयोग किया जा रहा हो तो उसे पहले सात दिन तक खुरदरे अथवा पनालीदार कागज से ढंकना आवश्यक है। इससे तापमान को बनाये रखने में सहायता मिलती है और तार की जाली में चूजों के पैर फंसने से उनकी मृत्यु का खतरा भी नहीं रहता और वे आसानी से चल–फिर सकते हैं।

होवर के नीचे जहाँ गर्मी, भोजन और पानी उपलब्ध है, चूजों को रखने के लिए होवर के चारों ओर ब्रूडर गार्ड अथवा ब्रूडर रिंग का प्रयोग करना चाहिए । इन गार्ड़ो को वहाँ तब तक रखना चाहिए जब तक कि चूजे उस नए वातावरण से परिचित न हो जाएं । ब्रूडर गार्ड चूजों को ऊर्जा स्रोत से अलग होने से भी बचाता है। ब्रूडर गार्ड 14 से 18 इंच की ऊँचाई के पनालीदार कार्ड बोर्ड अथवा धातु की चादर के बने होने चाहिए। ब्रूडर गार्ड यदि धातु की चादर के बनाये जाते हैं तो इसमें पैनल लगाकर एक दूसरे को जोड़ा जा सकता है ताकि वे ब्रूडिंग क्षेत्र को चारों ओर से घेर सकें । प्रारम्भ में ब्रूडर गार्ड को गर्मी के स्रोत से 2 से 3 फुट की दूरी पर रखना चाहिए, जिसे बाद में धीरे–धीरे बढ़ाकर 3–4 फुट कर देना चाहिए। गार्ड को ब्रूडिंग के दसवें दिन के बाद हटा देना चाहिए। दाने और पानी के बर्तनों तथा गार्ड के बीच में 6 से 12 इंच की दूरी बनाये रखना चाहिए। इस खाली स्थान से चूजे दाना और पानी के बर्तनों के चारों ओर आसानी से घूम सकेंगे । ब्रूडर को सभी प्रकार से तैयार रखना चाहिए और चूजों के आने से दो दिन पूर्व ब्रूडर को चला देना चाहिए। इससे यह सुनिश्चित हो सकेगा कि बिजली के सभी स्विच संतोषजनक ढंग से कार्य कर रहे हैं और इससे ब्रूडिंग क्षेत्र गर्म हो रहा है। चूजों को ब्रूडर में रखने से ठीक पहले दाने और पानी के बर्तनों को भरकर सही स्थान पर लगा देना चाहिए ।

टर्की के बच्चों को मुर्गियों की अपेक्षा अधिक गर्मी की आवश्यकता होती है तथा प्रथम सप्ताह ब्रूडिंग के दौरान इनके लिए 95° फा. तापमान बनाए रखना चाहिए। इस आयु के पश्चात ब्रूडर के अंदर के तापमान को प्रति सप्ताह लगभग 5° फा. तब कम करते रहना चाहिए जब तक कि तापमान 70° अथवा 75° फा. तक न पहुँच जाये अथवा वायुमंडलीय तापमान के अनुकूल न हो जाये। सर्दी की ऋतु में ब्रूडिंग के दौरान कृत्रिम गर्मी को छठवें सप्ताह तथा ग्रीष्म ऋतु में ब्रूडिंग के दौरान चौथे सप्ताह बंद कर देना चाहिए। ब्रूडर के अन्दर उपयुक्त तापमान है अथवा नहीं इसका पता इस बात से लगाया जा सकता है कि एक सप्ताह अथवा इससे आगे ब्रूडर में चूजे स्वतंत्र रूप से घूम–फिर रहे हैं कि नहीं। ब्रूडर घर में हर समय रोशनी का प्रबन्ध रखना चाहिए अन्यथा अंधेरे में टर्की के चूजों के डर कर एक कोने में सिमट कर मरने की सम्भावना बढ़ जाती है।

चूजों का व्यवहार तथा तापमान

चूजों का दैनिक निरीक्षण अत्यन्त आवश्यक है। ब्रूडर अथवा होवर में तापमान की स्थिति का अध्ययन करने के लिए चूजे स्वयं ही सर्वोत्तम निर्देशक (गाइड) होते हैं। यदि चूजे आपस में सटकर इकट्ठा होते हैं तो यह समझना चाहिए कि उनको अत्यधिक सर्दी लग रही है और जब अवरक्त (इन्फ्रारेड) ब्रूडिंग का प्रयोग किया जा रहा हो तब चूजे लैम्प के नीचे गोलाई में तुरन्त चारों ओर बैठ जाते हैं। यदि वहां पर्याप्त मात्रा में गर्मी नहीं है अथवा उन्हें फर्श से अलग कर दिया गया हो तो चूजे गर्मी के स्रोत के नीचे बैठे दिखाई देते हैं। अपर्याप्त गर्मी से चूजे ब्रूडर घर के कोनों में सटकर

इकट्ठा होते हैं जिससे भीड़ के कारण चूजों की दबकर मृत्यु हो जाती है। यदि गर्मी अधिक होती है तो चूजे ब्रूडर घर की दीवार के चारों ओर बैठे दिखाई देते हैं तथा वे होवर से दूर भागना चाहते हैं। ब्रूडर में होवर के नीचे अथवा ब्रूडर हाउस में चूजों का वितरण (चूजों की स्थिति) अथवा उनके क्रिया–कलापों से चूजों के लिए सुविधाजनक (आरामदायक) तापमान की स्थिति का पता चलता है।

होवर के नीचे अथवा ब्रूडर में तापमान के अनुसार चूजों का वितरण

भौतिक निरीक्षण के अतिरिक्त चूजों की आवाज (चहकना) सुनना भी अत्यन्त आवश्यक है। यदि चूजे अधिक शोरगुल मचा रहे हैं तो इसका अर्थ है कि या तो तापमान गलत है अथवा दाना–पानी की कमी है। चूजों को अचानक अधिक गर्मी देने अथवा वायुमंडलीय बदलाव से बचाना चाहिए । चूजों तथा ब्रूडर घर की स्थितियों की सावधानीपूर्वक निगरानी करने से यह सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी कि क्या व्यवस्था करना है।

टर्की को जब बन्द स्थान पर पाला जाता है तो वहाँ उनके आपस में चोंच मारने का अधिक खतरा रहता है, जो एक खतरनाक कैनाबोलिज्म का रूप धारण कर सकता है। समूह का उचित प्रबन्धन करके इस समस्या को दूर किया जा सकता है। अधिक भीड़, अपर्याप्त आहार अथवा दाना–पानी की कमी तथा दाना–पानी के लिए अपर्याप्त स्थान से भी गंभीर समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। चोंच मारने को नियंत्रित करने का सबसे प्रभावशाली तरीका यह है कि चूजों की डिबीकिंग (चोंच काटना) कर दी जाये । चोंच काटने की सबसे उपयुक्त आयु 3–5 सप्ताह होती है। यदि इस आयु तक चूजों की डिबीकिंग नहीं हो पाती है तो चूजों का आकार बड़ा होने के कारण उन्हें संभालना कठिन हो जाता है। एक दिवसीय चूजों की डिबीकिंग नहीं करना चाहिए, इससे चूजों के खाने–पीने पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है और वे भूख तथा निर्जलीकरण से मर भी सकते हैं। किसी टीकाकरण अथवा अन्य प्रतिबल (स्ट्रेस) के समय भी डिबीकिंग नहीं करना चाहिए।

आहार

टर्की को आहार देना मुख्य तथ्य है, क्योंकि उत्पादन लागत का 70 प्रतिशत भाग इनके आहार पर ही व्यय हो जाता है। वर्तमान में टर्की के लिए मुर्गियों की तरह संतुलित आहार बाजार में आसानी से उपलब्ध नहीं है, अनुभवशील किसान इसे एन0आर0सी0 विशिष्टताओं के अनुरूप आसानी से तैयार कर लेत हैं अथवा कुक्कुट पोषण विशेषज्ञों के परामर्श से तैयार करते हैं। यद्यपि टर्की के आहार में मिलाने वाले आहार अवयव वही हैं जो मुर्गी के राशन में होते हैं, परन्तु टर्की–आहर मुर्गी–आहार से भिन्न होता है। टर्की–आहार में प्रोटीन, खनिज तथा विटामिन की अधिक मात्रा होती है, जो टर्की की वृद्धि में सहायक होते है। इसलिए टर्की–राशन मुर्गी–राशन की अपेक्षा मंहगा होता है। दोनों लिंगों में ऊर्जा तथा प्रोटीन की आवश्यकता अलग–अलग होने के कारण उत्तम परिणाम प्राप्त करने के लिए उनको हैच निकालते समय अलग–अलग कर लिया जाता है और अलग–अगल ही पाला जाता है। आहार ग्रहण करने के मामले में टर्की के चूजे मुर्गी के चूजे की अपेक्षा अधिक परेशान करते हैं। हैच निकालने के तुरन्त बाद उनको खिलाना अच्छा होता है। यदि तुरन्त उनको आहार और पानी आसानी से नहीं मिलता है तो चूजों में भूखमरी और निर्जलीकरण होना लगता है। चूजों को जल्दी से खाने में मदद के लिए पहले आहार को एग फिलर फ्लेट्स, चिक बॉक्स लिड, पेपर प्लेट्स, प्लास्टिक की छोटी ट्रे अथवा बॉक्स कवर पर रखना चाहिए। जब चूजे आये तो उनके सामने आहार का बर्तन रख देना चाहिए। जब एक या दो चूजे आहार खाना प्रारंभ कर देते हैं तो उनको देखकर और चूजे खाने की ओर आकर्षित होते हैं। टर्की को हमेशा नाली या टोकरी में खिलाना चाहिए, उन्हें कभी भी धरातल पर नहीं खिलाना चाहिए। आहार को खराब होने से बचाने के लिए आहार को बर्तन को उसकी ऊँचाई का 1/3 भाग ही आहार से भरना चाहिए।

लगभग 6 सप्ताह की आयु तक की टर्की के लिए स्टार्टर आहार में 28 प्रतिशत प्रोटीन से आहार कार्यक्रम शुरू किया जाता है। छः से आठ सप्ताह की आयु के चूजों के लिए ग्रोवर आहार में 26 प्रतिशत प्रोटीन मिलाकर देना चाहिए

तथा 16 सप्ताह की आयु तक की टर्की को 22 प्रतिशत प्रोटीन युक्त आहार (दूसरा ग्रोवर आहार) देना चाहिए। सोलह सप्ताह से ऊपर विपणन की आयु तक 16 प्रतिशत प्रोटीन युक्त फिनिशर आहार देना चाहिए ।

वर्द्धनशील चूजों के लिए फीडिंग कार्यक्रम

चूजों की आयु	आहार का प्रकार	प्रोटीन प्रतिशत	ऊर्जा(कि.ग्रा. कैलोरी)
0–6	स्टार्टर आहार	28	2800
6–8	ग्रोवर–पहला आहार	26	2800
8–16	ग्रोवर–दूसरा आहार	22	3000
16– विपणन	फिनिशर आहार	16	3500

नियमित चिकित्सा

साधारणतः छोटे टर्की समूहों के साथ रोगों से होने वाले नुकसान की समस्या नहीं है, फिर भी कभी–कभी कुछ नुकसान हो जाता है। व्यवसायिक उद्यमियों के पक्षी समूहों में कहीं–कहीं 3 से 4 प्रतिशत मृत्यु–दर देखी गई है। टर्की मुर्गियों की अपेक्षा कुछ रोगों में अधिक प्रतिरोधी हैं। इनमें मैरेक्स तथा ब्रोंकाइटिस बीमारी बहुत ही कम देखने को मिलती है। रानीखेत रोग, पक्षी चेचक तथा कॉक्सीडियोसिस बीमारी कहीं–कहीं थोड़ी बहुत दिखाई पड़ जाती है। चूजों को अच्छे तथा साफ–सुथरे स्थान से खरीदना चाहिए तथा उनको पर्याप्त रूप से टीका लगा होना चाहिए तथा ऐसे स्थान पर सफाई के सर्वोत्तम नियमों का अनुपालन हो रहा हो। पक्षियों को औषधि देने के बजाय बेहतर प्रबन्धन से रोगों की रोकथाम के उपाय पर विशेष बल देना चाहिए।

टर्की चूजों के स्वास्थ्य की स्थिति का पता लगाने हेतु टर्की समूह की जांच प्रतिदिन करना तथा आवश्यकतानुसार स्वास्थ्य प्रबन्ध करना चाहिए। अगर कोई विशेष स्वास्थ्य समस्या नहीं है तो भी बीमारियों से बचाव तथा अधिकतम उत्पादन प्राप्त करने हेतु नियमित चिकित्सा करना उचित रहता है।

अगर टर्की समूह में कोई बड़ी बीमारी आ जाती है तो बिना देर किये रोग के लक्षणों का पता लगाकर उसका निदान करना चाहिए क्योंकि टर्की अत्यधिक संवेदनशील पक्षी है और रोग की चिकित्सा में देर करने से अन्य स्वस्थ टर्की चूजों को प्रभावित होने की संभावना हो जाती है। नियमित चिकित्सा निम्न कार्यक्रमानुसार आवश्यकता के अनुरूप करते रहना चाहिए ।

1–5 दिन तक एन्टीबायोटिक्स तथा इलैक्ट्रोलाइट्स
6–12 दिन तक मल्टी विटामिन्स तथा प्रोबोसिस
13–19 दिन तक विटामिन बी काम्प्लेक्स
20–26 दिन तक सेलेनियम के साथ विटामिन ई
27–33 दिन तक हीपाटोटॉनिक्स
34–40 दिन तक कैल्शियम, फास्फोरस तथा विटामिन डी–3

उपरोक्त दवाईयों की मात्रा निर्माता की संस्तुति के आधार पर प्रदान करना चाहिए।

टीकाकरण

प्रमुख वायरल रोगों से बचाव हेतु आमतौर पर टर्की में टीकाकरण किया जाता है। यह पाया गया है कि वर्तमान में भारतीय टर्की के समूहों को रानीखेत बीमारी, न्यूकैसिल बीमारी तथा टर्की पॉक्स के जीवाणु संक्रमण से बचाना आवश्यक है क्योंकि दूसरी अन्य प्रमुख बीमारियाँ अभी तक भारतीय टर्की समूहों में नहीं पायी गयी हैं।

टीकाकरण कार्यक्रम

आयु	टीका	मात्रा तथा विधि
एक अथवा पांचवे दिन	आरडीएफ स्ट्रैन	आंख और नाक में 1–1 बूंद
दूसरे सप्ताह	टर्की पाक्स/फाउल पाक्स	विंग वैब विधि से एक बूंद
चौथे सप्ताह	आरडीएफ स्ट्रैन	आंख और नाक में 1–1 बूंद
छठे सप्ताह	टर्की पाक्स/फाउल पाक्स	विंग वैब विधि से एक बूंद
आठवें सप्ताह	आरडीआर 2 बी स्ट्रैन	0.5 मिली0

प्रशीतन किये गये टीकों को निर्माता द्वारा आपूर्ति किये गये तनुकारकों से फिर तैयार करना उचित रहता है। टीका निर्माता की संस्तुति के आधार पर ही मात्रा तथा अन्य दिशा निर्देशों का पालन करना चाहिए। टर्की पॉक्स संक्रमण से बचाव हेतु टर्की पाक्स विषाणु टीका प्रयोग करना उत्तम है। अगर यह उपलब्ध नहीं है तो टर्की पॉक्स संक्रमण से कुछ हद तक बचाव हेतु फाउल पॉक्स विषाणु टीका प्रयोग करना चाहिए। यह भी आवश्यक है कि टर्की पालक उपचार एवं टीकाकरण करने से पूर्व किसी पशु–चिकित्सक से परामर्श अवश्य कर लें ।

टर्की में स्वास्थ्य की दैनिक देखभाल

टर्की के आठ सप्ताह तक के चूजे वयस्क पक्षियों की तुलना में बीमारियों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होते है। इसलिए हैच निकलने के दिन से विपणन तक टर्की चूजों की आवश्यक देखभाल करना बहुत जरूरी है। टर्की में बीमारियों का प्रकोप कुछ जैविक कारकों जैसे बैक्टीरिया, विषाणुओं, कवकों तथा परजीवियों के कारण होता है। इसके साथ ही साथ प्रबन्धन कार्यों में कमियों, आहार में निश्चित पोषकों के अभाव अथवा विषों की मौजूदगी के कारण भी बीमारियों का प्रकोप देखा गया है। इसलिए इन सभी कारणों से होने वाली सभी बीमारियों को रोकने के लिए उचित देखभाल करना होगा ताकि टर्की कम से कम बीमारियों से प्रभावित हो सके और टर्की पालन को अधिक लाभदायक बनाया जा सके ।

बीमार टर्की पक्षियों के लक्षण :

1. बीमार पक्षी समूह अथवा अन्य स्वस्थ्य पक्षियों से दूर बैठा अथवा खड़ा रहता है।
2. वे अपने शरीर के पिछले भाग को ऊपर उठाये हुए आगे की ओर झुक कर खड़े होते हैं और उनके सिर और गर्दन थोड़ा सा झुके हुए होते है।

3. वे प्रायः आँख बन्द करके खड़े अथवा बैठे रहते है।
4. उनकी आँखों का रंग फीका पड़ जाता है अथवा उनकी आँखों में स्राव भरा होता है।
5. उनके पंख सिकुड़ गये होंगे तथा चमक कम हो जायेगी ।
6. बीमारी टर्की दाना और पानी कम ग्रहण करते है अथवा वे दाना–पानी लेना छोड़ देते है।
7. बीमार पक्षी शिथिल हो जाते है। अथवा उनकी हिलने–डुलने की बिल्कुल इच्छा नहीं करती है।।
8. कली–कली उनके मुंह से लार गिरती है।
9. उनकी नाक बहती है, चेहरे पर सूजन आ जाती है अथवा खाँसी, छींके आदि आने लगती है।
10. उनका शरीर भार कम हो जाता है तथा वयस्कों में अण्डा उत्पादन कम हो जाता है।
11. प्रभावित पक्षियों में डायरिया हो सकता है तथा मलद्वार के पास पंख गंदे हो सकते है।
12. कभी–कभी शरीर के पृच्छ विहीन भागों जैसे–सिर, आखों के कोनों, नाक के छिद्रों, चोंच के निकट, पैरों, गर्दन के आस–पास, पंखों, पैरों के ऊपर आदि में फुंसियों अथवा (गाँठों) ग्रांथियों का बनना देखा गया है।
13. वयस्कों में स्नूट और गलकम्बल (ड्यूलैप) सिकुड़ जायेगें और उनके रंग फीके हो जायेगें ।
14. बीमार समूह में एक नियमित अन्तराल पर पक्षियों की मृत्यु होगी ।

बीमारियों की रोकथाम

जैव–सुरक्षा उपायों, दैनिक उपचारों तथा टीकाकरण कार्यक्रमों के माध्यम से बीमारियों की रोकथाम की जा सकती है।

जैव–सुरक्षा कार्यक्रम

जैव सुरक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत जैविक कारकों जैसे बैक्टीरिया, विषाणुओं, परजीवियों आदि जो बीमारियों के कारके है, को फार्म में प्रवेश करने से रोककर सावधानी बरतनी चाहिए और समूह को बीमारी से बचाना चाहिए। इस प्रकार बाहरी व्यक्तियो, अन्य जानवरों तथा पक्षियों के प्रवेश पर रोक लगाना चाहिए। टर्की पक्षियों को साफ एवं सुरक्षित पीने का पानी तथा दाना (आहार) देना चाहिए। आहार संतुलित तथा माइकोटॉक्सिन्स जैसे विषैले तत्वों से मुक्त होना चाहिए। फार्म में स्वास्थ्यकर तथा साफ–सफाई का पर्याप्त प्रबन्ध आवश्यक है। मक्खियों तथा मच्छरों के साथ–साथ कृन्तकों जैसे कीड़े–मकोड़ों के दबाव को कम करना चाहिए, क्योंकि ये रोगों के वाहक के रूप में कार्य करते है। बीमारियों को फैलने से रोकने के लिए यह आवश्यक है कि मृत पक्षियों तथा फार्म अपशिष्टों का निपटान उचित ढंग से किया जाये।

टीकाकरण के लिए सावधानियाँ

1. वैक्सीन (टीके) को प्रतिष्ठित निर्माताओं से ही खरीदना चाहिए तथा ठंडे स्थान पर रखना एवं ठंडे समय में उसका प्रयोग करना चाहिए ।
2. स्वस्थ समूहों का टीकाकरण करें ।
3. टीकाकरण के समय पानी में क्लोरीन अथवा जैवरोधियों का प्रयोग कदापि न करें।
4. वैक्सीन (टीके) निर्माता अथवा पशु–चिकित्सक के अनुदेशों का पालन करें।
5. टीकाकरण के लिए वैक्सीन (टीके) की निर्धारित खुराक, उपयुक्त तनूकारक तथा निर्जीवीकृत शीशे के बर्तन का प्रयोग करें।
6. टीकाकरण के पहले, उसके दौरान और बाद में पक्षियों को दबाब–रहि चिकित्सा उपलब्ध करायें।
7. बची हुई वैक्सीन (टीके), खाली एम्पुलों आदि का उचित ढंग से निपटान करें ।

वर्द्धनशील (ग्रोवरों) तथा वयस्क पक्षियों को प्रत्येक माह मल्टी विटामिन, बी काम्प्लेक्स, हीपाटोटोनिक्स तथा खनिजों से उपचारित किया जा सकता है।

वर्द्धनशील तथा वयस्क पक्षियों को 1–2 माह के अन्तराल पर मल नमूनों के परीक्षण के बाद उपयुक्त एन्थेलमिन्टिक्स का प्रयोग करके कृमि रहित किया जा सकता है।

टर्की पक्षियों का प्रदर्शन तथा टर्की पालन से लाभ पक्षियों की बेहतर स्वास्थ्य स्थितियों पर निर्भर करता है। इसलिए पक्षी समूहों में स्वास्थ्य आहार खपत तथा प्रदर्शन संबंधी कोई गड़बड़ी देखने पर उसे रोकने के लिए तुरन्त सभी आवश्यक उपाय करें ताकि लाभ को कम होने से बचाया जा सके ।

टर्की आहार बनाने हेतु आहार सूत्र

	टर्की	टर्की	टर्की	टर्की	टर्की	टर्की
	स्टार्टर	ग्रावर	लेयर	स्टार्टर	ग्रावर	लेयर
आहार अवयव (%)	फिश मिल सहित			फिश मिल रहित		
मक्का	55.335	65	61	57.825	65	62
डी.ओ.आर.बी.	2	5.355	2.585		4.325	3.705
सोयाबीन	29	16	17	32	20	19.6
सूर्यमुखी	5	5	5	6	6.5	4
मछली की खल	5	5	4	0	0	0
मि·मिक्स	1.5	1.5	1.2	1.2	1.2	1.2
ओइस्टर शैल	0	0	3	0	0	0
मार्बल चिप्स	0	0.24	3.5	0	0.5	6
चूना पत्थर	0.4	0.4	2	0.5	0.4	2
डी·सी·पी·	0.6	0.5	0.05	1	0.8	0.6
नमक	0.2	0.25	0.25	0.5	0.5	0.5
डी·एल·मैथयोनिन	0.12	0.03	0	0.12	0.05	0.04
लाइसिन	0.14	0.13	0	0.2	0.15	0
मिनरल प्रीमिक्स	0.25	0.2	0.1	0.25	0.2	0.1
विटामिन प्रीमिक्स	0.15	0.15	0.15	0.15	0.15	0.15
बी काम्प्लेक्स	0.015	0.015	0.015	0.015	0.015	0.015
स्टेफैक –20	0.05	0.05		0.05	0.05	0
कोलीन क्लोराइड	0.08	0.05	0.03	0.08	0.05	0.03
विटामिन ई एवं सिलिनियम	0.01	0.01	0.02	0.01	0.01	0.01
टॉक्सिन बाइनडर	0.05	0.02	0.05	0.05	0.05	0.05
कोकसीडियोस्टेट	0.05	0.05	0	0.05	0.05	0
योग	100	100	100	100	100	100
रासायनिक संरचना (%)						
कुड प्रोटीन	23.50	19.00	17.50	23.50	19.00	17.50
मेटाबोलाइजेबिल एनर्जी '	2850	2850	2700	2850	2850	2700
कैल्शियम	1.10	1.15	3.60	1.10	1.15	3.60
एविलेबिल फासफोरस	0.45	0.40	0.36	0.45	0.40	0.36
लाईसिन	1.45	1.10	0.85	1.45	1.10	0.85
मिथियोनिन	0.50	0.40	0.35	0.50	0.40	0.35

KRISHI VASANT

लेखक

डॉ. समीर मजुमदार

संगठन

टर्की शोध इकाई

केन्द्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान

इज्जतनगर (उ.प्र.) – 243 122

कृषि एवं सहकारिता विभाग

कृषि मंत्रालय

भारत सरकार